कलीसिया अध्याय 47

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट)	*[मनन का समय]* **प्रकाशितवाक्य 15-18**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 15-18) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट)	*[यूहन्ना में मुख्य पद]* **(20) यूहन्ना 18:36**

दो-दो लोगों के द्वारा **पुर्नावलोकन**

(20) यूहन्ना 18:36. यीशु ने कहा, मेरा राज्य इस संसार का नहीं, यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता, परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ का नहीं।

4	**शिक्षा** (85 मिनट)	*[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]* **सताव और परमेश्वर की संप्रभुता**

यह शिक्षा दु:खों के बारे में हैं। दु:ख, मसीही और गैर मसीही दोनों पर समान रुप से आते हैं। लोग बहुत अलग प्रकार के दु:खों का सामना करते हैं और अलग तरीकों से उन पर प्रतिक्रिया करते हैं। परन्तु सभी का द्वन्द इन प्रश्नों से होता है कि दु:ख क्यों आते हैं और इनका क्या महत्व है। यह अध्ययन इन प्रश्नों का ही उत्तर देता है।

क. दु:खों को व्यक्त करने की आवश्यकता है

1. दु:ख अनेक प्रकार के होते हैं।

परिचय दें। लोग अनेक तरीकों से कष्ट सहते हैं।

(1) कष्टों के विभिन्न प्रकार।

कुछ लोग इस लिए कष्ट सहते हैं, क्योंकि वे बिमार होते हैं या शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक रुप से असक्षम होते है। हो सकता है कि उन्होंने खतरनाक शल्यचिकित्सा (ऑप्रेशन) का या हमेशा की अपंगता का सामना किया हो।

कुछ लोग इस लिए कष्ट सहते हैं कि उनकी योजनाएँ, सपने, और उम्मीद बिखर चुकी होती हैं, या वे ऐसा महसूस करते हैं कि उनकी प्रेम और सार्थक संबन्धों की लालसा कभी भी पूरी नहीं हुई है। अन्य लोग कष्ट सहते हैं, क्योंकि वे अपने जीवन में किसी उद्देश्य को नहीं पाते। कुछ लोग कष्ट सहते हैं, क्योंकि उनके जीवन में वैवाहिक समस्याएँ होती है या निराशाजनक काम होता होता है। और अन्य लोग इस लिए दु:खी होते हैं, क्योंकि वे अपराधबोध और शर्मिन्दगी को महसूस करते हैं। कुछ लोग इस लिए दु:ख सहते हैं, क्योंकि दूसरे उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं। कुछ लोग दु:ख सहते हैं, क्योंकि वे नियमों और अपनी परिस्थितियों के बन्धन को महसूस करते हैं।

(2) दु:खों के सम्बन्ध में प्रश्न।

बहुत से लोग इस लिए दु:खी होते है, क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि उनकें ज्वलनशील प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल सकते। उनके प्रश्न उनको लगातार ताने और यातना देते हैं। उदाहरण के लिए वे पूछते हैं,

- ''किस प्रकार मैं कष्टों का समाधान प्रेमी और सर्वसामर्थी परमेश्वर के साथ कर सकता हूँ?''
- ''मैं ही क्यों दु:खों का सामना करुँ? मैं ही क्यों, परमेश्वर?'' ''मैं ने ऐसा क्या किया कि मुझे ही यह दु:ख हुआ?''
- ''किस प्रकार कोई मुझे इस कष्ट से छुड़ा सकता है?'' ''कब मैं इन सब दु:खों से आजाद होऊँगा?''

लोग अपने अनुत्तरित प्रश्नों से सताएं जाते हैं।

(3) दु:खों की यातना।

कुछ लोग दु:खी होते हैं, क्योंकि वे उन लोगों को लगातार देखते रहते हैं जो इस संसार में कष्ट भोग रहे हैं। वे बिमार व्यक्तियों की पीड़ा को देखनें के द्वारा और उनके लिए कुछ भी न कर पाने की असमर्थता को महसूस कर दु:खी होते है। अपने ही गुस्से की भावना के द्वारा वे घबरा जाते है और इस होने वाले अन्याय से रोष से भर जाते हैं। मरने वाले अपने किसी प्रिय को बिदाई का वचन कहते हुए वे व्यथित हो जोत हैं। लोग अपने कष्ट और मृत्यु के डर से घबरा जाते हैं। वे इस बात की चिन्ता से घबरा जाते हैं कि क्या वे अपने कष्टों से पार पाने के योग्य हैं या उन्हें छोड़ देना चाहिए। चाहे किसी भी रुप में कष्ट आये यह हमेशा परेशान करता है, यह हमशा दु:खी करता है और हमेशा कठिन होता है!

2. दु:खों को स्वयं को व्यक्त करने के लिए स्थान की आवश्यकता होती है।

परिचय दें। उन लोगों को जो दु:ख में हैं और उत्तरों की खोज में हैं। परन्तु इस से पहले, अवश्य ही उन्हें अपने दु:खों को सर्वप्रथम व्यक्त करने और अपने ही अन्दर समाहित करने के लिए अवसर उपलब्ध कराना चाहिए। बाइबल में बहुत से लोगों ने दु:खों का अनुभव किया है और दु:ख या चिन्ता की भावनाओं को महसूस किया है।

खोजें और चर्चा करें। बाईबल में लोगों ने किस प्रकार दु:खों को व्यक्त किया है?

(1) अय्यूब।

पढ़े अय्यूब 3:1-26.

ध्यान दें। जब अय्यूब ने अपनी सम्पत्ति और साथ ही साथ अपने पुत्र-पुत्रियों को खो दिया, तब उसने अपने जन्म के दिन को कोसा, क्योंकि वह दु:खी और क्रोधित था। वह उत्सुक्ता से अपने दु:खों के लिए उत्तर की खोज में था। उसने कहा, ''मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?'' (अय्यूब 3:11) ''मुझे न तो चैन, न शान्ति, न विश्राम मिलता है(परन्तु दु:ख की आता है।'' (अय्यूब 3:26)।

(2) दाऊद।

पढ़ें। भजन संहिता 6:1-10. भजन संहिता 6 दाऊद की आंसुओं भरी प्रार्थना है। यद्यपि वह एक योद्धा और मशहूर राजा था, तौभी उसने रोने को शर्म की बात नहीं जाना। उसने प्रार्थना की, ''मैं कराहते-कराहते थक गया मैं अपनी खाट आंसूओं से भिगोता हूँ प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है। मेरी आंखें शोक से बैठी जाती हैं और मेरे सब सताने वालों के कारण वे धुंधला गई हैं।'' (भजन संहिता 6:6-7)

पढ़ें। भजन संहिता 30:1-12

ध्यान दें। जब दाऊद बहुत बिमार था और मरने के कगार पर था, उसने परमेष्ठवर की दया के लिए दोहाई दी कि वह जीवित रहे और परमेष्ठवर की विश्वासयोग्यता का प्रचार करता रहे। उसने प्रार्थना की, ''हे यहोवा, मैनें तुझी को पुकारा(और यहोवा से गिड़गिड़ाकर यह विनती की, कि जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरे लहू से क्या लाभ होगा? क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है? क्य वह तेरी सच्चाई का प्रचार कर सकती है?''(भजन संहिता 30:8-9)

पढ़ें। भजन संहिता 69:1-21. जब लोगों ने दाऊद को सताया और परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध हो गई, उसने बड़े भावनात्मक तनाव को अनुभव किया और अपने दुख को परमेश्वर के लिए की गई अपनी प्रार्थना में व्यक्त किया। उसने प्रार्थना की, ''हे परमेश्वर, मेरा उद्धार कर, मैं जल में डूबा जाता हूँ। मैं बड़े दलदल में धाँसा जाता हूँ, और मेरे पैर कहीं नहीं रुकते(मैं गहिरे जल में आ गया, और धारा में डूबा जाता हूँ। मैं पुकारते पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है(अपने परमेश्वर की बाँट जोहते जोहते, मेरी आँखें धुँधली पड़ गई है।'' (भजन संहिता 69:1-3) वह रोया और उपवास किया, क्योंकि वह अपमानित, लज्जित, और अनादर पाया हुआ था (भजन संहिता 69:10,19)। उसने कहा, ''मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया, और मैं उदास हूँ। मैंने किसी तरस खाने वाले की आशा तो की, परन्तु किसी को न पाया, और शान्ति देने वाले को ढूँढता तो रहा, परन्तु कोई न मिला। (भजन संहिता 69:20)

पढ़ें। भजन संहिता 142:1-7. दाऊद अपनी सभी शिकायतों को परमेश्वर के आगे उड़ेलने और अपनी समस्याओं को उसको बताने में डरता नहीं था। उसने कहा, ''मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन, क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है! जे मेरे पीछे पड़े हैं, उन से मुझे बचा ले(क्योंकि वे मुझ से अधिाक सामर्थी हैं।'' (भजन संहिता 142:6)

(3) यीशु।

पढ़ें मत्ती 27:46।

ध्यान दें। यहां तक कि यीशु ने भी अपने दुख: को क्रूस पर से ऊँचे शब्दों में पुकारा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?''

सारांश। अय्यूब, दाऊद और यीशु के समान आप भी अपने दु:खों को *व्यक्त* करते होंगे। दुखी होने के लिए पर्याप्त समय ले। आप अपनी ही प्रार्थना करें या परमेष्ठवर के सम्मुख अपने दु:खों और वेदनाओं को व्यक्त करने के लिए भजनों में अन्य दुखी लोगों की प्रार्थना को लें। परमेश्वर की रुची इस बात में है आप क्या महसूस करते हैं और उसकों आप के दु:खों की चिन्ता होती है। वह आप के आंसूओं को देखता और सहायता के लिए आप की दोहाई को सुनता है!

3. पीड़ा दूसरे लोगों की प्रतिक्रियाओं का उदाहरण भी देती है।

परिचय दें। लोग न केवल अपने दु:खों के लिए बल्कि दूसरों के दु:खों पर भी अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। कुछ धर्म सभी प्रकार के दु:खों को व्यक्तिगत पाप की सजा मानते हैं, जो उसने वर्तमान जीवन या पूर्व जीवन में किये हों(अवतारवाद)। वह लोगों का न्याय यह कह कर करते हैं कि, ''यह उनकी अपनी गलतियाँ और उसकी उप्युक्त सजा है''। आह! वे दु:खों को ''परिवार के लिए शर्म के रुप में लेते हैं'' और अपाहिज या मानसिक अभिषप्त व्यक्ति को समाज से छुपाते हैं। इस लिए *उन्हें दूसरों के दुख: और पीड़ाओं के लिए कोई दया महसूस नहीं हो सकती और न ही उन पर तरस दिखा सकते हैं।*

यद्यपि, इब्रानियों 4:15-16 सिखाता है, कि यीशु हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी होता है और हमें अनुग्रह और दया प्रदान करता है जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करता है। और 2कुरि. 1:4 सिखाता है, ''वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों।''

खोजें और चर्चा करें। दूसरे लोगों के दु:खों के लिए मसीही लोगों को किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

(1) शोक करना।

पढ़ें। रोमियों 12:15। मसीही लोगों को रोने वालों के साथ रोना चाहिए।

(2) सहानुभूति रखना।

पढ़ें मत्ती 27:46; इब्रनियों 10:34. मसीही लोगों को उन मसीही लोगों के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए जो यीशु मसीह पर अपने विश्वास के कारण से बंधुवा है।

(3) भेंट करें, प्रार्थना और सहायता करें।

पढ़ें। मत्ती 25:39, 27:46, 2कुरि. 1:4। मसीही लोगों को संसार में दुखी लोगों को भेंट करने जाने की और उन के साथ दु:खों में शामिल होने या किस प्रकार उन्हें सांत्वना दें इस को सीखने की आवश्यकता है। मसीही लोगों को यह सीखने की अवश्यकता है कि दु:खी लोगों के लिए किस समय *प्रार्थना* की जाए और किस समय उन्हें उनके दु:खों में *सहायता* करने करनी है।

ख. लोग गलत करने के कारण दु:ख उठाते हैं

परिचय दें। सभी लोग अपने जीवन में किस समय दु:ख जरूर उठाते हैं। कभी कभी वे परमेश्वर की दृष्टि में गलत करने के कारण दु:ख उठाते हैं और कभी कभी परमेश्वर के सम्मुख सही करने के कारण दु:ख उठाते हैं। पाँच कारण ऐसे हैं जिनकी वजह से संसार में सभी लोग दु:ख उठाते हैं।

1. लोग अपनी ईश्वरहीनता के कारण दु:ख उठाते हैं।

(1) सभी दु:खों का वास्तविक कारण मानव जाति का पाप में पड़ना है।

पढ़ें उत्पत्ति 3:1-19; रोमियों 8:18-21।

खोजें और चर्चा करें। मानव जाति के सभी दु:खों का वास्तविक कारण क्या था?

ध्यान दें। बाइबल स्पष्ट रूप से यह बताती है कि सभी दु:खों का कारण मनुष्य का पाप में पड़ना था। उत्पत्ति 3 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार प्रथम मनुष्य (यद्यपि एकदम परमेश्वर के रुप स्वरुप में रचा गया) पाप में पड़ा। आदम ओर हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा को न मान कर और उस से स्वयं को छुपा कर अपनी पीठ को परमेश्वर की ओर फेर दिया। परमेश्वर ने दुख:, परेशानियाँ और शारीरिक मृत्यु के द्वारा उनके पाप की सजा दी।

रोमियों 5:12 कहता है (एकदम सही), ''इस लिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप कि द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया *इस कारण से या इस से सम्बधित होकर* (यूनानी: एफोह) सभी (लोग) *एक बार तो सभी ने पाप किया* (यूनानी: पैन्टेस हिमारटोन) (ऑरिस्ट टेन्स)''। परमेश्वर केवल *व्यक्तिगत* रुप में ही नहीं बल्कि *सामूहिक* रुप में भी सोचता है। सभी वास्तविक लोग अपने पूर्वज आदम के साथ पाप में *पक्कायत के साथ* शामिल होते हैं। और यीशु मसीह में सभी विश्वासी अपने प्रतिनिधि यीशु मसीह में पक्कायत के साथ दण्ड की आज्ञा से रहित और बचाये जाते हैं! बिल्कुल ऐसे ही जैसे आदम उन सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो पाप में पड़े और नष्ट हो गये, वैसे ही यीशु मसीह उन सभी मसीही लोगों का का प्रतिनिधित्व करता है जिनका न्याय हुआ और बचाये गये(जो मसीह ने किया उस पर विश्वास करने के द्वारा)(रोमियों 5:12, 17-19) पूरी मानव जाति आदम के पाप में भागीदार होती है और मसीह की सम्पूर्ण कलीसिया यीशु मसीह की धार्मिकता में भागीदार होती है (1कुरि. 1:30; 2कुरि. 5:17,21)। ''क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक की के द्वारा राज्य किया, तो जो अनुग्रह और धर्मरुपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य की अनन्त जीवन में राज्य करेंगे'' (रोमियों 5:17)।

वास्तविक मनुष्य ने परमेष्ठवर के साथ अपने उत्तम संबन्ध, परमेश्वर के समक्ष अपनी बेगुनाही और अपनी अमरता को खो दिया। मनुष्य को परमेश्वर और अन्य लोगों की उपस्थिति में *अपराधबोध, शर्म* और परमेश्वर की उपस्थिति में *डर* महसूस हुआ। शैतान मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु बन गया। स्त्री को बच्चे जन्ने की पीड़ा के बढ़ने और पुरुष की अधीनता में जाने का कष्ट भोगना पड़ा। और पुरुष को कठिन परिश्रम करने के कष्ट को भोगना पड़ा। अन्तत: मनुष्य की देह बेकार हो जाती है और वह मर जाता है (उत्पत्ति अधयाय 3)।

सम्पूर्ण सृष्टि भी विनाश के दासत्व के अधीन है (रोमियों 8:19-20)। पृथ्वी और प्रकृति ऊट और काटरे उगाने की वजह से अब उत्तम नहीं रह गई (उत्पत्ति 3:18) और भूकंप, बाढ़, सूखे और आकाल के द्वारा नष्ट होने का कारण बन गई(यहेजकेल 14:21)।

मनुष्य और सृष्टि को पाप में गिरने से लेकर मसीह के दूसरे आगमन तक कष्ट सहना है, क्योंकि तभी पृथ्वी नयी की जायेगी और सृष्टि सि(ता की ओर पुनः स्थापित की जायेगी (प्रेरितों के काम 3:21)।

(2) मानव जाति के लगातर कष्ट में होने का कारण ईश्वरहीनता है.

पढ़ें। भ.सं. 14:1-3; रोमियों 1:18-23।

खोजें और चर्चा करें। क्यों मानव जाति लगातार कष्ट सहती है?

ध्यान दें। समपूर्ण मानव जाति इस लिए लगातार कष्ट सहती है क्योंकि सभी मनुष्य लगातार आदम के कदमों पर चलते रहते हैं। वे लगातार ईश्वरहीन होते जाते हैं।

वे लोग जो ईश्वरहीन होते हैं, उनका बाइबल के परमेश्वर से कोई संबन्ध नहीं होता या गलत संबन्ध होता है! एक ईश्वरहीन व्यक्ति मानता है कि परमेश्वर होता ही नही या वह, ''परमेश्वर जिसने स्वयं को बाइबल और यीशु मसीह में प्रगट किया है के अलावा दूसरे देवताओं'' में आस्था रखता था। एक नास्तिक की जीवन शैली का पता इस तथ्य से लगाता है कि स्वयं को अपना ''ईश्वर'' मानता है और वह करता है जो उसे आनन्द देता है। एक धार्मिक व्यक्ति, जो मसीही नहीं है, की जीवन शैली का पता इससे चलता है कि वह अपने लिए मूर्तियाँ और साधन बनाता है जो परमेश्वर के विषय में उसके स्वयं के विचारों को और उसके जीने के तरीकों को न्यायसंगत करें[2]। इस प्रकार के धर्मी लोग ज्यादातर अपनी बातों को सही ठहराने या मुक्ति के लिए अपने ही साधनों, अपने ही धर्म, मनुष्य द्वारा बनाये गये अपने ही धार्मिक नियमों का पालन या उन कामों को करते हैं जिन्हें वे सही मानते हैं[3]। संक्षेप में, ईश्वरहीनता या तो बाइबल के परमेश्वर के बिना रहना है या बाइबल के परमेश्वर के साथ गलत संबन्ध में रहना है!

ईश्वरहीनता का परिणाम यह होता है कि लोगों की सोच निरर्थक, मूल्यहीन, बेकार और फलहीन हो जाती है और उनके हृदय अंधकारमय हो जाते हैं। परिणामस्वरुप वे झूठ और कपट के संसार में रहते हैं। उनके पास नैतिक और आत्मिक जीवन जीने के लिए पर्याप्त प्रकाश की कमी होती है। वे ऐसे संसार में रहते हैं जहां उन्हें सच्चे परमेश्वर का ज्ञान नही होता और उसकी दृष्टि में क्या सही है उसको पहचाने की सामर्थ को भी नही पा पाते। इस प्रकार के संसार में लोग कष्ट झेलते हैं और दूसरों को उनके कष्ट का दोषी मानते हैं!

3. लोग कष्ट सहते है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के सत्य को दबा या बदल दिया होता है.

पढ़ें। लूका 5:31-32; यूहन्ना 9:39-41; रोमियों 1:18,23,25; 1यूहन्ना 1:8-22।

---

[2]उदाहरण के लिए, पवित्र युद्धों, आतंकवाद, बदले में हत्या करना और स्त्रीयों के साथ दुर्व्यवहार को न्यायसंगत मानना।

[3]उदाहरण के लिए, दिन में अनेक बार प्रार्थना करना, कुछ समयों पर उपवास रखना, निर्धारित धनराशी को देना, तीर्थयात्राओं को करना, और एक धार्मिक तरीके से कपड़े पहना आदि।

खोजें और चर्चा करें। वह कौन सी बातें हैं जो लोग हमेशा करते हैं जो उनके कष्ट सहने का कारण होती हैं?

ध्यान दें।

(1) लोग लगातार सत्य को दबाते हैं या झूठ के लिए सत्य को बदल देते हैं।

यह बहुत से कष्ट का कारण होता है। केवल जब व्यक्ति अपनी शारीरिक बीमारी के सत्य को जान पाता है तो क्या डॉक्टर उसकी सहायता कर सकता है। एक व्यक्ति जब अपनी समस्या का इन्कार करता है तो उसकी समस्या का समाधान नही किया जा सकता(लूका 5:31-32)। और केवल जब व्यक्ति अपने पाप के सत्य का सामना करता है, क्या यीशु उसे बचा सकते हैं। वह व्यक्ति जो यह इन्कार करे कि उसने पाप किया है, केवल स्वयं को धोखा देता है(यूहन्ना 1:8-22)। केवल जब व्यक्ति इस सत्य पर विष्ठवास करता है कि केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर और उद्धार की ओर जाने वाला मार्ग है, तो वह पाप की दासता से छुटकारा पाएगा (यूहन्ना 8:32-36) और वह पूर्ण रुप से बचाया जाएगा, वह यह कि, उसे दुबारा प्यास न लगेगी और दुबारा तिरस्कृत नहीं होगा (यूहन्ना 6:35-37)।

(2) सत्य क्या है?

''सत्य'' बाइबल का परमेश्वर कौन है और क्या कहता और करता है उसका ज्ञान है (यूहन्ना 14:6; 17:17)।

बाइबल जो स्वभाविक मनुष्य के बारे में बताती है वही सत्य है (वह व्यक्ति जो परमेश्वर के बिना रह रहा हो)। बाइबल के परमेश्वर के बिना आप अपने बारें में सत्य को या जीवन के महत्व को नहीं जान सकते हैं। परमेश्वर के बिना मनुष्य जीवन के आधारभूत प्रश्नों के लिए तार्किक और कारण सहित उत्तरों को देता है। ''मैं कहां से आया हूँ?'' ''मैं कौन हूँ?'' ''मैं यहां पर किस लिए हूँ?'' ''मुझे किस प्रकार जीवन जीना चाहिए?'' और ''मैं कहां पर जा रहा हूँ?'' बिना परमेश्वर के मनुष्य पूर्ण रुप से खोया हुआ होता है!

बाइबल यीशु मसीह के विषय में जो बताती है वही सत्य है। वह जो यीशु को *ग्रहण* करता है, परमेश्वर को *ग्रहण* करता है(मत्ती 10:40)। वह जो यीशु मसीह का *इन्कार* करता है[4] वह परमेश्वर का *इंकार* करता है (लूका 10:16)। वह जो मसीह का *आदर* करता है, वह परमेश्वर का *आदर* करता है(यूहन्ना 5:23अ)। वह जो मसीह का *आदर* नहीं करता[4], परमेश्वर का भी *आदर* नहीं करता (यूहन्ना 5:23ब)। केवल वे ही *जिन्हें परमेश्वर मसीह को देता है*, मसीह के पास आता है और वह फिर उन्हें खोने नहीं देता(यूहन्ना 6:37,44)। वह जो मसीह को *जानता है*, परमेश्वर को *जानता है*(यूहन्ना 8:19)। वह जो मसीह से *प्रेम करता है*, परमेश्वर से *प्रेम करता है* (यूहन्ना 8:42)। वह जो मसीह पर *विश्वास करता है*, परमेश्वर पर *विश्वास करता है*(यूहन्ना 12:44)। वह जो मसीह के वचनों को *सुनता है*, परमेश्वर के वचनों को *सुनता है*(यूहन्ना 12:47-50)। वह जो मसीह को *स्वीकार करता है*, परमेश्वर को *स्वीकार करता है* (यूहन्ना 13:20)। वह जो मसीह को *देखता है*, परमेश्वर को *देखता है*(यूहन्ना 14:9-10)। वह जो मसीह की *आज्ञा और शिक्षा को*

4अन्य धर्म यहां तक कि जानबूझकर यीष्ठु मसीह का अनादर करते है।

मानता है, परमेश्वर उसे प्रेम करता है और परमेश्वर उसके घर में आयेंगे उसके साथ वास करेंगे (यूहन्ना 14:21,23)। मसीह अन्नत जीवन देता है, परमेश्वर को प्रगट करता है और उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है *जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिया होता है*(यूहन्ना 17:2,6,9)। वह जो मसीह का *आभार व्यक्त करता है,* वह परमेश्वर का भी आभार व्यक्त करता है(1यूहन्ना 2:23अ)। वह जो मसीह का *इन्कार* करता है, तो वह परमेश्वर का इंकार करता है(1यूहन्ना 2:23ब)। वह जो मसीह का आभार व्यक्त करता है, परमेश्वर उसमें वास करता है और वह परमेश्वर उस में(1यूहन्ना 4:15)। वह जो मसीह से *प्रेम* करता है, परमेश्वर से प्रेम करता है (1यूहन्ना 5:1)। वह जो, *मसीह की शिक्षाओं में बना नहीं रहता,* परमेश्वर उसके पास नहीं होता (2यूहन्ना 9)। बाइबल में यह सत्य अन्य सभी ईश्वरों, भविष्यद्वक्ताओं और संसार के धर्मो को नाश करता है!

सत्य वही है जो बाइबल मसीही लोगों के बारे में बताती है।

- यीशु मसीह में विश्वासी की सत्य सुरक्षा है: वह जानता है कि उसे बिना किसी शर्त के प्रेम और हमेशा के लिए स्वीकार किया जाता है(यशायाह 43:1-4)!
- विश्वासी को यीशु मसीह में महत्वपूर्ण जीवन मिलता है: वह जानता है कि उसका जीवन महत्वपूर्ण, अर्थपूर्ण और फलवन्त होता है(यिर्मयाह 29:11; यूहन्ना 15:5)!

बिना परमेश्वर के, लोग इन दो महत्वपूर्ण सत्य को नहीं जान पाते और इस लिए वो लगातार अपने अनदेखेपन और दुख में कष्ट भोगते है।

(3) परमेश्वर, उसके वचन और उसके कामों से सत्य अप्रथक रुप से जुड़ा।

वे लोग जो झूठ के लिए सत्य को दबा और बदल देते हैं, अपने ही विवेक के विरुद्ध पाप करते हैं, गलत शिक्षा में विश्वास करते हैं (धारणा, समपर्ण, सत्य) और अपने ही साथ गलत संबन्ध में होते हैं। मनुष्य की परिस्थिति और इस संसार की नियती के बारे में बाइबल के परमेश्वर के सत्य को, जो वह कहता है और करता है, हमेशा नजरअंदाज किया गया, जानबूझकर दबाया गया या जानबूझकर बदल दिया गया। सरकार स्वयं को आत्मिक और नैतिक सामर्थ के समक्ष छोटा नही करना चाहती। अमीर या सामर्थी या बुद्धिजीवी लोग सदैव सत्य को दबा और बदल देते हैं, क्योंकि सत्य को स्वीकार करने का अर्थ उनकी जीवन शैली को बदलना होगा। जैसे-जैसे सरकार और लोग बदलाव को अस्वीकार कर देते हैं, और अन्यायी और स्वार्थी होते है, वे अपने अन्त के लिए लगातार सत्य को दबा और बदल देंगे। इसका परिणाम यह है कि वे लोग कष्ट भोगते है।

स्वभाव से, मनुष्य है:

- बाइबल के परमेश्वर के साथ गलत संबन्ध - वह ईश्वर रहित है
- अपने साथ के व्यक्तियों के साथ गलत संबन्ध - वह अधर्मी है(दुष्ट)
- स्वयं के साथ गलत संबन्ध - वह झूठ में विश्वास करता है

बाइबल इन तीन संबन्धों को एक शब्द से बुलाती है: पाप। सश्सार में बहुत से कष्टों का वास्तविक कारण ''पाप'' है: सच्चाई यह है कि लोग उनके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को खो देते हैं!

4. लोग वास्तविक मृत्यु के होने के कारण से कष्ट सहते हैं।

पढ़ें। सभोपदेशक 9:2-12; रोमियों 6:23।

खोजें और चर्चा करें। सभी लोग कष्ट सहते हैं क्योंकि वे मृत्यु से डरते हैं। क्यों अधिकतर लोग मृत्यु से डरते हैं?

ध्यान दें। सभी लोग कष्ट सहते हैं क्योंकि वे मर जाएंगे। क्योंकि सभी लोगों ने पाप किया है, सभी लोग मरेंगे।

मृत्यु बहुत खतरनाक है, इसलिए बहुत से लोग इसके विषय में बात करना पसंद नही करते। अधिकतर लोगों के लिए मृत्यु सभी कष्टों का अन्त होती है। ज्यादातर लोग मृत्यु से डरते हैं, क्योंकि मृत्यु का अर्थ *अलगाव* होता है:

- *आपकी आत्मा का* आपकी देह से: आपकी देह मिट्टी में मिल जाती है और आपकी आत्मा या प्राण स्वर्ग या नरक में चली जाती है।
- *आपके प्रिय लोगो से*: आपको उनको पीछे छोड़ देना होता है!
- *आपके अधिकार से*, अपनी सभी पढ़ाई से, अपनी नौकरी से, अपनी सारी परिपूर्णता से, और रुतबे से अलगाव। उनमें से कुछ भी मृत्यु के बाद साथ नहीं जाएगा जिसके लिए आपने बहुत कठिन परिश्रम किया।

''क्योंकि न तो हम कुछ साथ लाये थे, और न ही कुछ साथ ले जाएंगे'' (1तीमुथियुस 6:7)।

मृत्यु उन लोगों के लिए भी भयावह होती है जो पीछे छूट जाते हैं। वे अपने प्रियों से अलग हो जाते है और हमेशा उन्हें याद करेंगे। कभी-कभी वे कष्ट सहते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि मृत्यु के बाद उनके प्रिय कहां गये स्वर्ग में या नरक में। तौभी वे अपने लिए मृत्यु से डरते हैं, क्योंकि वे नहीं जानते कि उनकी मृत्यु का समय कब आएगा या मृत्यु के बाद क्या उमीद करनी है। मृत्यु की वास्तविकता सभी लोगों के कष्ट का कारण होती है।

5. लोग परमेश्वर के न्याय की वास्तविक उपस्थिति के कारण कष्ट सहते है।

(1) परमेश्वर के वर्तमान न्याय लोगों के कष्ट का कारण होते हैं।

पढ़ें। गलातियों 6:7-8; आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:6-10; यहेजकेल 14:21।

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार परमेश्वर का न्याय लोगों के कष्ट का कारण होता है?

ध्यान दें।

लोग कष्ट सहते हैं क्योंकि परमेश्वर न्याय को *अनुमति* देते हैं उन लोगों को दण्ड देने की जो उसके नियमों को तोड़ते हैं। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि में व्यवस्था को बनाया है। यदि इन नियमों को तोड़ा जाए,

तो वे अपने साथ दण्ड लाते हैं। ''मनुष्य जो बोता है वही काटता है''(गलातियों 6:7-8)। उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति भौतिकी के नियम, गुरुत्व को नजरअंदाज करता है और ऊँची इमारत से कूद जाता है, तो अवश्य ही वह मर जाएगा। इसी प्रकार, परमेश्वर ने सृष्टि में आत्मिक और नैतिक व्यवस्था को बनाया है। एक आलसी गरीबी को काटता है। नशे को बाटने वाला नशे की लत का शिकार हो जाता है। यौन अनैतिक व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारीयों को काटता है। वह व्यक्ति जो हथियार उठाता है हथियार से ही नष्ट हो जाता है।

लोग इस लिए कष्ट सहते है क्योंकि परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध जो उसको नजरअंदाज, तिरस्कार करते या अनाज्ञाकारी होते हैं न्याय को *लाता* है। परमेश्वर सृष्टि को नियंत्रित करता है जिसमें ऐतिहासिक घटनाएँ और प्राकृतिक ताकतें भी शामिल हैं। उन समयों में जब लोग परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते या जब लोगों और परमेश्वर के मध्य का सम्बन्ध टूट जाता है, तब परमेश्वर संसार के प्रति अपनी चिन्ता को खीच लेता है या वह लोगों को दण्ड देता है। तब परमेश्वर संसार और उसके लोगों पर न्याय लेकर आता है और वे कष्ट सहते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर प्रकृति के फलों को साथ ही साथ खाने और कपड़ों जैसी आधारभूत जरुरतों को वापस ले लें। वह लोगों की थैली में छेद कर देता है और जीवन की बड़ी उम्मीदों को छोटा कर देता है(हाग्गै 1:6-10)। इस प्रकार, परमेश्वर सम्पूर्ण इतिहास में सभी प्रकार के दु:खों जैसे भूकंप, बाढ़ और विशेषकर सूखे और अकाल का प्रयोग पाप के साथ अपनी नाराजगी को दिखाने के लिए और लोगों पश्चताप करने और अपनी ओर मोड़े के लिए सावधान करते हैं(यहेजकेल 14:21; प्रकाशितवाक्य 8:6-9:21)। परमेश्वर कहता है, ''तौभी तुम मेरी ओर फिर कर न आये। परमेश्वर के सामने आने के लिए तैयार हो जा।''(आमोस 4:6-12)!

(2) परमेश्वरहीन और विधर्मी लोग अन्तिम न्याय के समय पर सबसे बुरे कष्ट को सहेंगे।

पढ़ें। इब्रानियों 9:27; मत्ती 25:46; 2थिस्सलुनिकियों 1:8-9।

खोजें और चर्चा करें। सबसे बुरा कष्ट क्या होगा?

ध्यान दें। सबसे बुरा कष्ट नरक में परमेष्ठवर का अनन्त दण्ड है। परमेष्ठवर का अन्तिम न्याय मृत्यु के बाद आयेगा। तब परमेष्ठवर सभी लोगों का उनकी ईष्ठवरहीनता, दुष्टता, झूठ और यीष्ठु मसीह के तिरस्कार के लिए न्याय करेगा। दुष्ट का दण्ड परमेष्ठवर से हमेष्ठा का अलगाव होगा और दिन और रात हमेष्ठा-हमेष्ठा के लिए जलना होगा। परमेष्ठवर के अन्तिम न्याय के बाद कष्ट मृत्यु से भी अधिाक बुरे है! सभी अविष्ठवासी और दुष्ट लोग आने वाले समय में कष्ट सहेंगे। यह बहुत ही गम्भीर बात है! परमेष्ठवर के भविष्य के न्याय के बाद के कष्ट पृथ्वी के वर्तमान सभी दु:खों और कष्ट से कही अधिाक बुरे होंगे!

ग. मसीही लोग भलाई करने के लिए कष्ट सहते है

परिचय दें। मसीह लोगों को अवश्य ही गलत करने के लिए कष्ट सहने और सही करने के लिए कष्ट सहने दोनों के मध्य भेद करना आना चाहिए। मसीही लोग गलत करने के लिए कष्ट सहने के लिए नही बुलाये गये हैं परन्तु जो सही है उसके लिए कष्ट सहने के लिए बुलाये गये हैं। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता

हमशा जो सही होता था उसके लिए कष्ट सहते थे। यीशु मसीह ने सही के लिए कष्ट सहा। नये नियम में प्रेरितों ने सही के लिए कष्ट सहा। और मसीही लोगों को भी सही के लिए कष्टों को सहने के लिए बुलाया गया है।

1. मसीही लोग हमेशा कष्ट सहते हैं क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों को बदल नहीं सकते।

खोजें और चर्चा करें। मुश्किल परिस्थितियों में एक मसीही व्यक्ति को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए?

(1) कभी-कभी मसीही लोग मुश्किल देशों में रहते हैं.

पढ़ें। प्रेरितों के काम 17:25-76।

ध्यान दें। मसीही लोग इसलिए कष्ट सहते हैं क्योंकि वे अपनी बाहरी परिस्थितियों और स्थितियों को बदल नहीं सकते। परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के पृथ्वी पर स्थान और उसकी बाहरी परिस्थितियों को निर्धारित किया है। यह उसकी इच्छा है कि इन परिस्थितियों में ही प्रत्येक व्यक्ति उसे खोजें! इसका अर्थ यह नहीं है कि उस व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए कोशिश नही करनी चाहिए, यदि वह उन को बदलने के योग्य है। परमेश्वर ने लोगों को अपनी परिस्थितियों में से अधिक से अधिक प्राप्त करने की कुछ योग्यताएँ और मौके दिये है!

(2) कभी कभी मसीही लोग पृथ्वी की बातों के दास होते है.

पढ़ें 1पतरस 2:18-20; इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:22-4:1; मत्ती 5:6; प्रेरितों के काम 5:29।

ध्यान दें। दास होने के नाते यह मुश्किल है। बहुत सी स्त्रियां धार्मिक या सांस्कृतिक कारणों से अपने ही घर में दास होती हैं। गरीब देशों में बहुत से बच्चे लालची माँ-बाप या काम करने वालों की वजह से दासत्व में झोक दिये जाते हैं। बहुत से विदेशी काम करने वालों का शोषण किया जाता है और बहुत कम मजदूरी प्रदान की जाती है।

मसीही लोगों को दासता को कैसे मान देना चाहिए? नये नियम के समय पर भी, दासता समान्य थी और लोग बहुत बार अपने कठोर स्वामियों के द्वारा सताये जाते थे। 1पतरस 2:8 कहता है, ''हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भलों और नम्र के, पर कुटिला के भी।'' यह दास गृह कार्य करने वाले लोग होते थे जो प्रतिदिन अपने स्वामियों और गृह स्वामियों के सम्मुख उपस्थित रहते थे (लूका 12:35-48) न कि वह दास जो पृवेक्षको के अन्तर्गत बाहर काम करते हो (निर्गमन 5:6)। पौलुस प्रेरित सिखाता है कि इन दासों को स्वयं को अधिनस्थ रखना चाहिए और अपने स्वामियों की आज्ञा माननी चाहिए। वे भय के साथ स्वयं को अपने स्वामियों के आधीन करें, *क्योंकि विरोद्ध करना बेकार है और केवल उनके साथ दुर्व्यवहार को बढ़ाएगा।* उनको उनके साथ सभी बाहरी और भीतरी आदर और मान के साथ अधिनस्थ करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर की यह इच्छा है। उन्हें केवल उन्ही स्वामियों के अधीन नहीं होना है जो भले और समझदार है, परन्तु कठोर स्वामियों के भी अधीन होना है। कठोर का अर्थ चिड़चिड़ा, सड़े हुए मुंह का, अनुचित, सनकी, अप्रत्याशित और अन्यायी भी। पौलुस प्रेरित यह कहता है कि

मसीही गृह सेवकों को अपने स्वामियों के अधीन रहना है चाहे वे अनुचित मांग या अन्याय के कारण कठोर ही क्यों न हो।

मसीही लोगों को वर्तमान समय के स्वामित्व और सेवक के सम्बन्ध को किस प्रकार देखना चाहिए? स्वामी-सेवक का सम्बन्ध आज के आधुनिक समय में ''नियुक्तिकर्त्ता और कार्यकर्त्ता'' के सम्बन्ध के रूप में देखा जाना चाहिए। बाइबल यह मांग करती है कि मसीही कार्यकर्त्ता को आदर के साथ अपने नियुक्तिकर्त्ता के अधीन रहना चाहिए। मसीही कार्यकर्त्ता को बहुत बार अपने नियुक्तिकर्त्ता के अन्यायी नियमों और कामों के कारण कष्ट सहना पड़ता है। जब भी उनका नियुक्तिकर्त्ता अनुचित मांग करता है और उनके विरुद्ध अन्याय के साथ काम करता है, वे कष्ट सहते हैं। कभी-कभी नियुक्तिकर्त्ता ऐसा व्यवहार करते हैं कि जैसे उन्होंने अपने कार्यकर्त्ता को खरीद लिया है और उन से कोई भी मांग कर सकते हैं। कुछ नियुक्तिकर्त्ता बिना किसी मजदूरी को दिये अतिरिक्त समय तक काम करने की मांग करते हैं। अन्य कुछ अपने काम करने वालो को अस्वस्थ और खतरनाक परिस्थितियों में काम करने को मजबूर करते हैं। कुछ अन्य नियुक्तिकर्त्ता ऐसे लोगों को जो नौकरी के लिए बहुत उत्सुक होते है बहुत कठिन काम कराते हैं परन्तु उनको बहुत कम मेहनताना देते है या उनकी तनख्वाह रोक कर रखते हैं (याकूब 5:1-6)। कुछ देशों में नियक्तिकर्त्ता बच्चों को बिना शिक्षा और सही तनख्वाह दिये अपने काम करने वालों की श्रेणी में शामिल कर लेते हैं। बढ़ती हुई संख्या में बहुत सी जवान लड़कीयों को, विशेषकर गरीब परिवार की, जबरदस्ती साइबर यौन व्यपार में धकेल दिया जाता है (इंटरनेट और मोबाईल फोन वैश्यावृति)। बहुत सी कठोर और अन्यायी परिस्थितियाँ मसीही और गैर मसीही लोगों को कष्ट झेलने पर मजबूर करती हैं।

मसीही लोगों को इस प्रकार की कठोर परिस्थितियों के अधीन आदर, कठिन परिश्रम, उत्तम काम करते हुए, विश्वासयोग्य, और ईमानदारी के साथ रहना चाहिए सम्भवत: वे अपने नियुक्तिकर्त्ता के समाने यीशु मसीह की गवाही को रख सकें(मत्ती 10:16-20)! इसी समय पर, मसीही लोगों को अपनी अन्यायी परिस्थितियों को बदलने के सभी सम्भव प्रयास करें और करना चाहिए भी, परन्तु उन्हें हमेशा ही अपने नियुक्तिकर्त्ता से और उसके विषय में आदर से बात करना चाहिए।

2. मसीही लोग हमेशा कष्ट सहते हैं क्योंकि वे धर्मी जीवन जीते हैं।

खोजें और चर्चा करें। उन परिस्थितियों में मसीही लोगों को किस प्रकार का प्रतिउत्तर देना चाहिए जब वे, जो परमेश्वर की दृष्टि में सही है, उसे करने के लिए कष्ट सहते हैं?

(1) पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं को सताया गया।

पढ़ें इब्रानियों 11:36-37।

ध्यान दें। यह कहता है, ''दूसरे लोग जो मज़ाक में उड़ाएँ जाने; और कोड़े खाने; वरन बाँधो जाने; और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए। पत्थराव किए गए; आरे से चीरे गए; तलवार से मारे गए; वे कंगाली और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरे।''

(2) मसीही लोगों को भी सताया जायेगा।

पढ़ें मत्ती 5:10-12; इब्रानियों 10:33-34; 2तीमुथियुस 3:12।

ध्यान दें। मत्ती 5:10-12 में यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धान्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निदा करें और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे बारे में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है इसलिए कि उन्होनें उन भविष्यद्वक्तओं को भी जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।'' मसीही लोगों को बहुत बार सताया जाता है क्योंकि वे धर्मी होते हैं। धर्मी होने का अर्थ है कि वे परमेश्वर की पवित्र इच्छा में जीवन बिताते हैं(ऐसा कुछ जो गैर-मसीही लोगों को क्रोध दिलाये)।

अन्य लोग अपने विवेक में फंसे रहते हैं जबकि मसीह बाइबल के अनुसार जीवन बिताते हैं, वही करते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में सही होता है और जो परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट होता है उससे घृणा करते है। इसलिए वे मसीही लोगों को सताते है! दुष्ट लोग चाहते है कि इस प्रकार के धर्मी लोग दुष्टता करने में उनके साथ शामिल हो जाएं (यूहन्ना 3:19-21)।

कई शताब्दियों से मसीही लोग यीशु मसीह और परमेश्वर के राज्य की वजह से सताव को सह रहे है।

- मसीही लोगों को ''नास्तिक'' कह कर बुलाया जाता था क्योंकि वे दिखाई देने वाले मनुष्यों के द्वारा बनाये गये ईश्वरों की आराधना में भाग नहीं लिया।
- मसीही लोगों को ''जासूस'' और ''गद्दार'' कह कर बुलाया जाता था, क्योंकि वे हमेशा धार्मिक और राजनीतिक लोगों के सताव से बचने के लिए गुप्त जगहों पर मिलते थे।
- मसीही लोगों को ''देशद्रोही'' ''गैर-राष्ट्रीय'' कह कर बुलाया जाता है क्योंकि वे यीशु को राजा मान कर उसके प्रति अपने समर्पण का अंगीकार करते थे और रोमी सम्राट की आराधना करने से अस्विकार करते थे (फिलिप्पियों 3:20)।

इब्रानियों 10:33-34 मसीही लोगों के सताव का व्याख्यान करता है: ''कुछ तो ऐसे, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ ऐसे, कि तुम उनके सहभागी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी। क्योंकि तुम कैदियों के दु:ख में भी दुखी हुए, और अपनी संपत्ति भी आनन्द से लुटने दी यह जान कर कि तुम्हारे पास एक और उत्तम और सर्वदा ठहरने वाली संपति है।

मसीही के रुप में सताव बहुत से प्रकार से होता है। जैसे, कुछ मसीही:

- शहीद के रुप में मरते हैं
- सताव सहते है क्योंकि वे अपने मन को तैयार कर लेते हैं कि गैर मसीही से विवाह नहीं करेंगे
- अपनी नौकरी को खो देते हैं क्योंकि वे व्यापार के कूटनीतिक समझौतों में शामिल नहीं होते, रिश्वत नहीं लेते या झूठ नहीं बोलते

- सताव सहते हैं क्योंकि स्कूल से, विष्ठवविद्यालयों, सरकारी ओहदो से या शिक्षक के रूप में स्कूल से अलग कर दिये जाते हैं क्योंकि वे मसीह के अनुयायी माने जाते हैं और ज्योति में चलते रहते हैं।

मसीही लोग दवाब और सताव को नजरअंदाज नहीं कर सकते। 2तीमुथियुस 3:12 में पौलुस कहता है, ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।''

3. मसीही लोगे हमेष्ठा सताव सहते हैं क्योंकि वे यीशु मसीह के विश्वासपूर्ण गवाह हैं।

(1) मसीही लोग हमेशा सताव सहते हैं क्योंकि वे यीशु मसीह के विश्वासपूर्ण गवाह हैं।

पढ़ें मत्ती 10:16-20; प्रेरितों के काम 20:29-31; 1पतरस 4:15-16।

खोजें और चर्चा करें। जब मसीही लोगों को गवाह होने के लिए भेजा जाये तो उन्हें किस प्रकार बर्ताव करना चाहिए?

ध्यान दें। मसीही लोग बहुत बार सताव सहते हैं क्योंकि वे यीशु मसीह के विश्वासपूर्ण गवाह होते हैं। मसीही लोगों को सताव को सहने के लिए भेजा जाता है। यीशु के चेले और वर्तमान में यीशु के सभी सेवक सताव को आमंत्रित करने के लिए नहीं जाते। नही, यीशु ने स्वयं ही उन्हें सही में तो सुसमाचार प्रचार, बाइबल की शिक्षा, और लोगों की सहायता करने के लिए *भेजा।* उसने उन्हें ''भेड़ीयों'' के बीच में भेजा, जिसका मतलब, संसार के उन लोगों के बीच में जो उसके साथ भयानक और दुष्टता का व्यवहार करेंगे। ''प्रेरित'' (वह शब्द जिसक अर्थ भेजा हुआ) सही में लोगों के बीच में यीशु मसीह को प्रस्तुत करते थे। इसका अर्थ यह था कि यीशु मसीह उनके द्वारा काम कर रहे थे, कि वह उनके साथ होगे जब वह सताव सहेंगे और कि वह उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे जब आवष्ठयक होगा।

मसीही लोगों को निर्दोशता और बुद्धि के साथ सताव का सामना करना चाहिए। चेलों को अवश्य ही ''सांप के समान चतुर'' होना था। सांप की *सतर्कता और सावधनी* इस्राएल में एक कहावत था। मसीही लोगों को जो कुछ भी वे करें उसमें सावधन होना चाहिए। उन्हें जिसके सामने गवाह होना है *अर्न्तदृष्टि* को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए और यह खोजने की कोशिश करनी चाहिए कि उनको गवाही देने का सबसे सही तरीका क्या है। चेलों को ''कबूतर के समान भोला'' होने की भी जरुरत है। कबूतर इस्राएल में पवित्रता का प्रतिक था (श्रेष्ठगीत 5:2)। इसका अर्थ यह था कि मसीही लोगों को दुष्टता के साथ कोई समझौता नही करना था।

मसीही लोगों को गलत करने के कारण कभी भी सताव को सहना नहीं चाहिए. ''परन्तु लोगों से सावधान रहो'' (मत्ती 10:17) में निम्नलिखित बातें शामिल हैं: मसीही लोगों को भेले पन से स्वयं को लोगों के हवाले नहीं कर देना चाहिए, क्योंकि कुछ लोग उन्हें धोखा देंगे। यीशु के अपने ही समुदाय में, धार्मिक अगुवे उन्हें पकड़ने के लिए लगातार जाल बिछाते रहें, जिससे उन्हें उसे सभा के सामने लाने का मौका मिल जाए (मत्ती 12:10; यूहन्ना 8:6)। यहां तक कि, यीशु के अपने ही चेले, यहूदा ने उन्हें धोखा दिया। यीशु के आसमान पर चले जाने के बाद भी लोग उनसे घृणा करते थे और उनके चेलों को विरोध किया। मसीही लोगों को अन्य लोगों के जालसाजी के प्रश्नों में उलझना नहीं चाहिए, परन्तु अनुग्रह के लिए प्रार्थना करनी

चाहिए जिससे सही उत्तर मिल सकें। उन्हें लोगों को बिना किसी कारण के गुस्सा नही दिलाना चाहिए। उन्हें कुछ ऐसा भी नही करना चाहिए जो लोगों को उनके विरुद्ध किसी सही कारण उत्पन्न करें। 1पतरस 4:15-16 इस बात को इस प्रकार बताती है: ''तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो पर बात के लिए परमेश्वर की महिमा करें'' अत: *आपको मसीह के नाम की महिमा करनी है।*

मसीही लोगों को सताव के मौको का प्रयोग सरकारी अधिकारियों को गवाही देने के लिए करना चाहिए। यीशु ने अपने चेलों से कहा, ''तुम मेरे लिए राज्यपालों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजाजियों पर गवाह होने के लिए पेश किये जाओगे'' (मत्ती 10:18)। यीशु ने कहा कि चेले स्थानिय यहूदी सभा के हाथों में सौपे जायेंगे, जो सिनेगॉग में होना था। कुछ अपराधों के लिए उस समय पर कोड़े मारे जाने की प्रथा थी। अधिकतम सीमा 39 कोड़ों की थी(2कुरि. 11:24)। चेलों का महासभा के अधिकारियों जैसे राज्यपाल, राजा, जो उनका न्याय करेंगे, उनके सामने खीचा जाता था। यह यीशु और पौलुस दोनों के साथ हुआ। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने कहा इस सताव का उद्देश्य यह है कि चेले उनके न्यायियों के सामने गवाह ठहरे! *कभी-कभी सताव ही एकमात्र रास्ता होता है कि पुलिस, न्यायी और अन्य सरकारी अधिकारी परमेश्वर के प्रेम और क्षमा का संदेश सुनें।* मसीही लोगों के इसके लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि उस समय वे क्या कहेंगे, क्योंकि पवित्र आत्मा उनको यीशु के वचन याद करायेगा और उन्हें साहस से भर देगा।

(2) मसीही लोगों को इस प्रकार के सताव को यीष्ठु मसीह के सताव में सहभागिता के रुप में लेना चाहिए।

पढ़ें प्रेरितों के काम 26:14; रोमियों 8:17; 2कुरिन्थियों 1:5; कुलुस्सियों 1:24; 1पतरस 4:12-14।

खोजें और चर्चा करें। मसीही लोगों को अपने सताव को किस प्रकार लेना चाहिए?

ध्यान दें।

प्रभु यीशु मसीह का सताव। यीशु मसीह को ''शैतान'' (मत्ती 10:25), ''सामरी'' (यूहन्ना 8:48), ''दुष्टआत्मा ग्रसित'' और ''पागल'' (यूहन्ना 10:20) कह कर बुलाया गया। वह इस संसार के दुष्ट लोगों के द्वारा उस से घृणा की गई(यूहन्ना 15:18-21)। अधिकारियों ने उसे मार डालने का षड़यंत्र रचा(मत्ती 26:3-4)। अधिकारियों ने उसके मुंह पर थूका, सरकण्डे से मारा(मत्ती 26:67), उसका उपहास उड़ाया झूठी गवाहियों के साथ (मत्ती 26:59-60), उसको बांधा कर एक अपराधी के समान ले गये(मत्ती 27:1-2), उसके वस्त्र फाड़ कर उसकी गरिमा को बर्बाद किया गया, उसके सिर पर कांटो का मुकुट रखा गया, मज़ाक उड़ाया गया, उस पर थूका गया, उसक सिर पर डंडी से बार-बार मार गया (मत्ती 27:27-31) और अन्त में उसके हाथों और पांवो में लम्बी लोहे की कीले ठोकर क्रूस पर चढ़ा दिया गया (मत्ती 27:35)। तौभी वह पूर्ण रुप से निर्दोष था!

पौलुस प्रेरित का सताव। अपने हृदय परिवर्तन से पहले पौलुस ने भी वह सब किया जो यीशु मसीह के नाम का विरोध करने के लिए किया जा सकता था, मसीही लोगों को जेल में डाला, उनकी मृत्यु में सहमति

जताई, यहूदी धार्मिक निर्माण के लिए लोगों को कोड़ो से मारा और उनका यीशु मसीह की निन्दा करने के लिए दबाव बनाया(प्रेरितों के काम 26:9-11)। बाद में पौलुस को भी बहुत सताव को सहना पड़ा। उसे लगातार जेल जाना पड़ा, बुरी तरह से कोड़ो से मारा गया, पाँच बार उसे यहूदियों के द्वारा 39 कोड़ों से पीटा गया, तीन बार उसे बेंत से मारा गया, एक बार उस पर पथराव किया गया, उसे हमेशा अपने ही लोगों से खतरा रहा और झूठें भाईयों से खतरे में रहा(2कुरि. 11:23-26)। पौलुस ने अपनी देह में यीशु के निशानों को ले कर फिरा(गलातियों 6:17)।

यीशु के सताव में सहभागी होना। मसीही लोगों को इस प्रकार के सताव को ''सहभागिता या मसीह के सताव में सहभागी होना'' के रुप में लेना चाहिए (रोमियों 8:17; 1पतरस 4:13)। बाइबल यह बताती है कि जब मसीही लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण सताए जाते हैं या उसके और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं, तब ''मसीह की वेदनाएँ उनमें उमड़ती हैं'' (2कुरि. 1:5)। जब कोई यीशु मसीह के चेलों को सताता है, वह यीशु मसीह को ही सताता है! अपने हृदय परिवर्तन से पहले पौलुस मसीहों को सताता था। तब यीशु मसीह ने उस कहा, ''शाऊल तू मुझे क्यों सताता है?'' (प्रेरितों के काम 26:14)। मसीहों के विरुद्ध सताव सही में यीशु मसीह के विरुद्ध सताव है! इसका अर्थ यह है, जब आप मसीही होने के नाते सताये जाते हो, तो आप यीशु मसीह की उपस्थिति और उसके प्रेम से और उसकी सामर्थ और सांत्वना से दूर नही होते।

सताव के कोष को भरना जरुरी है। बाइबल में मसीही लोगों का सताव यीशु मसीह के सताव के रुप में समझा गया है। परन्तु कही पर मसीही लोगों के सताव को छुटकारे के काम को पूरा करने में योगदान के रुप में नही लिया गया। उनको केवल ''सताव के कोष को पूरा करने में जरूरी'' छुटकारे और मसीह की सम्पूर्ण देह के महिमाकरण के पूरा करने के रुप में लिया गया है (कुलुस्सियों 1:24)। पृथ्वी पर क्रूस पर मसीह का सताव पश्चताप के बलिदान के रुप में अद्‌भुत था और कोई भी उस बलिदान में सहयोग नही दे सकता! परन्तु स्वर्ग में मसीह अपनी देह(कलीसिया) में पृथ्वी पर लगातार सताव में है जैसा कि वे दबाव में और सताव में है।

मसीह की महीमा में सहभागी होना। रोमियों 8:17 कहता है कि मसीही लोग यीशु मसीह के सताव में इसलिए भागीदारी करते हैं कि वे उसकी महिमा में भी भागीदार होंगे! जैसा की मसीह को उसके सताव, मृत्यु और पुनरुत्थान की परिकल्पना में उन लोगों से जिनके लिए वह सताया गया, मारा गया, और पुनः जीवित हो गया अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार उस महिमा से जो उसके पूर्ण कार्य के इनाम के रुप में उसके लिए निर्धारित है उसको उन से अलग करने की परिकल्पना नही की जा सकती। और महिमा की स्थिति में उन को उससे अलग करने की परिकल्पना नही की जा सकती है। इसलिए मसीही कि विरासत की महिमा मसीह की महिमा से जो उसके उत्कर्ष कार्य का इनाम था अलग कुछ और नही हो सकती(यूहन्ना 17:24)। यीशु मसीह के साथ सताव वह स्थिति है जिस पर विरासत की प्राप्ति आकस्मिक है। परमेश्वर की महिमा में कोई भागीदारी नहीं है जब तक उसके सताव में भागीदारी नहीं है। सताव और

महिमा वह क्रम है जो यीशु मसीह के द्वारा स्वयं ही निर्धारित किया गया है(फिलिप्पियों 2:6-11)। यही समाव क्रम उन लोगों पर भी लागू होता है जो उसके साथ संगी वारिस है।

ड. सतावों के लिए प्रतिक्रियाएँ

1. इतिहास में सताव के लिए विभिन्न प्रतिक्रियाएँ।

खोजें और चर्चा करें. निम्नलिखित लोग सताव के लिए कैसी प्रतिक्रिया देते थे?
ध्यान दें। यह उदाहरण हमें सताव के लिए प्रतिक्रया देना नही सिखाते। वे व्यापक भी नहीं है।

(1) परमेश्वर के न्याय या शाप को बुलाना।

पढ़ें भजन संहिता 10:15; 58:6।
दाऊद ने अपने शत्रुओं पर न्याय और शाप पड़ने के लिए प्रार्थना की।

तौभी, यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि किस प्रकार हमें सताव के लिए प्रतिक्रिया देनी है, ''जो तुम्हे शाप दे उसे आशीष दो'' (लूका 6:27-28)। और पौलुस सिखाता है, ''जो तुम्हे सताते हो उन्हें आशीष दो शाप नहीं''(रोमियों 12:14)।

(2) डराना और बदला लेना।

पढ़ें मत्ती 5:38-42।
कुछ व्यक्ति बुरे होते हैं और बदला लेते हैं। वे ''दांत के बदले दांत और आँख के बदले आँख'' की मांग करते है। वे लोगों के साथ वह ही समान बुराई करते है जो उन्होंने उनके साथ खरी होती है। कुछ संस्कृतियाँ बुरी होती है और कथित रुप से ''सम्मान के लिए हत्या'' की शिक्षा देती हैं। वे सिखाते हैं कि व्यक्ति या परिवार या राष्ट्र या धर्म का सम्मान परिवार या समाज जिस से दोषी संबन्ध रखता हो के मासूम सदस्य की हत्या कर सदैव ऊँचा रखना चाहिए! इस रुप में कुछ परिवार सदियों से एक दूसरे को मार रहे हैं, कुछ राष्ट्रों ने एक-दूसरे के खिलाफ कभी भी युद्ध समाप्त नहीं किया और कुछ धर्म तो आतंकवाद या धार्मिक युद्ध की ओर मुड़ गये।

जो भी हो, यीशु मसीह ने हम मसीही लोगों को सिखाया कि सताव के खिलाफ जो किसी बुरे व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र या धार्म के कारण आये जो उसके लिए कैसे प्रतिक्रिया दी जाये। वह कहता है, ''बुरे व्यक्ति का सामना न करो''। जब उसके एक चेले ने विरोध करते हुए शत्रु का एक कान काट दिया तो, यीशु ने उसी समय उसके घाव को चंगा कर दिया(लूका 22:50-51) और कहा, ''अपनी तलवार को वापस रख लो, क्योंकि जो तलवार से लड़ते है तलवार से ही मारे जाते है''(मत्ती 26:51-52)। जब लोगों ने यीशु का अपमान किया उसने बदला नही लिया; जब उसने सताव सहा उसने कोई धमकी नही दी। इसके बदले उसने स्वयं को उसके हवाले कर दिया जो सही न्याय करता है(1पतरस 2:23)।

(3) यीशु मसीह को अस्वीकार करना।

पढ़ें मत्ती 10:17-20,32-39।

कुछ लोग सताव के डर के कारण से प्रतिक्रिया देते हुए परिवार, समाज और सरकार के समक्ष यीष्ठु मसीह को अस्वीकार कर देते है। वे सताव के डर के कारण से यह स्वीकार नहीं करते कि वे मसीही है।

तौभी, यीष्ठु मसीह ने मसीही लोगों को सावधान किया कि उसे अस्विकार न करे। वह कहता है, ''जो कोई अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे पीछे नहीं हो लेता वह मेरे योग्य नहीं है''। क्रूस प्रगट करती है कि सही मसीह को तिरस्कार, झूठे आरोपों, शर्म, मार और यहां तक की मृत्यु को यीष्ठु मसीह के लिए स्वेच्छा से स्वीकार करना होगा। यीष्ठु मसीह यह भी सिखाते है हम मसीही लोगों को सताव के लिए किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी चाहिए। जब आपका सताने वाला आप को कोड़े लगाये और अपने धार्मिक अगुवों, पुलिस या राजनीतिक नेताओं के सामने लाये, तब ''चिन्ता नहीं करना कि क्या या किस प्रकार बोलना है। उस समय पर तुमको बताया जायेगा क्या कहना है क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, परन्तु पिता का आत्मा तुम में होकर बोलता है।'' सताव ही केवल वह समय होता है जब ये धार्मिक अगुवे, पुलिस, न्यायी या सरकारी अगुवे सुसमाचार को सुनेंगे! सदियों से, इतिहास इस बात का गवाह है कि ''मसीही शहीद का लहू सुसमाचार का बीज बन जाता है''।

(4) शान्त रहें।

पढ़े मत्ती 10:33; 2तीमुथियुस 2:11-13।

कुछ लोग जो दबाव में होते हैं स्वयं को मसीही स्वीकार करने से डरते है(मसीह में विश्वासी)। तो वह लोगों के समाने मसीह का इंकार कर देते हैं। ''यदि हम उसका इंकार करेंगे तो वह भी हमारा इंकार कर देगा। यदि हम विश्वासघाती भी हों तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि आप अपना इंकार नहीं कर सकता (2तीमुथियुस 2:12ब-13)। इसका अर्थ यह बिल्कुल भी नहीं है कि हमारे अविश्वासी होने पर भी मसीह हमें अनन्त जीवन प्रदान करेगा! इसका केवल यह अर्थ हो सकता है कि मसीह केवल अपने वायदों को पूरा करने मे ही विश्वायोग्य नहीं है (मत्ती 10:32; 2तीमुथियुस 2:11-12अ), परन्तु *अपनी धमकियों को पूरा करने में भी विश्वासयोग्य है*(मत्ती 10:33. 2तीमुथियुस 2:12ब)।

ज्यादातर समयों पर, यीशु मसीह चाहते है कि मसीही लोग अपना मुंह खोले और अपने सताने वालों को गवाही दें। ज्यादातर परिस्थितियों में यीशु ने वही बोला जो सही था। जब उसे अन्याय के साथ पीटा गया, उसने कहा, ''यदि मैंने बुरा कहा, तो उस पर बुराई की गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो तू मुझे क्यों मारता है?'' (यूहन्ना 18:23)। दूसरे समयों पर, जब बोलना कारगर न हो उसने अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना की। उसने कहा, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि करते है'' (लूका 23:34)।

परन्तु कुछ परिस्थितियों में हम मसीहों को यीशु मसीह का उदाहरण अनुसरण करना चाहिए और शान्त रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब मसीह पर झूठे आरोप लगाये गये या जब उसके शत्रुओं ने उसका मजाक बनाया तब वह शान्त रहा(मत्ती 26:59-64; 1पतरस 2:21-23)।

(5) हमेशा धर्मी जीवन जीएं।

पढ़े 1कुरि. 4:9-13; 2कुरि. 11:23-29; 2तीमुथियुस 3:10-12।

पौलुस प्रेरित के पास सताव की प्रतिक्रिया के लिए बहुत से तरीके थे। वह तंगी की हालत में अपने हाथों से कठिन परिश्रम करता, जो उसे बुरा कहते उन्हें धैर्य के साथ उत्तर देता, जो उसको शाप देते उन्हें आशीष देता, और सभी प्रकार के सताव को सहता। उसके सताव में वह लगातार कलीसियाओं की देख भाल करता रहा। पौलुस इस बात को भली प्रकार से जानता था कि वह दूसरों के सामने मसीह का उदाहरण रख रहा था। वे उसकी जीवन शैली से उसके जीवन का उद्देश्य, विश्वास, धैर्य, प्रेम, मेहनत, सताव और कष्ट बहुत कुछ सीखते थे।

2. सताव के लिए विभिन्न संभव प्रतिक्रियाएँ।

(1) सताव को नजरअंदाज करना।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 10:17-18; 16:17-18; निर्गमन 23:8।

एक मसीही किसी भी हाल में सताव को अनदेखा करने की कोशिश करेगा या अपने सताने वालों को रिश्वत देगा। परन्तु बाइबल का परमेश्वर कभी भी रिश्वत नहीं देता (व्यवस्थाविवरण 10:17-18)! परमेश्वर के धर्मी न्यायी कभी भी रिश्वत नहीं लेते (व्यवस्थाविवरण 16:18-20)! और मसीही लोगों को रिश्वतखोरी में शामिल नहीं होना है (निर्गमन 23:8)!

एक मसीही अपने सताने वाले की अन्यायी मांग को मान कर और जो वह कहता है कर के सताव को किसी भी कीमत पर अनदेखा करने की परिक्षा में पड़ सकता है। तौभी, इस तरीके में मसीही व्यक्ति भी अपने सताने वाले के समान दुष्ट बन जाता है। एक मसीही को अपने नियुक्ता या सरकार को बताना चाहिए कि वह कभी भी वह कार्य नहीं करेगा जो अन्यायी हो या बाइबल में मना किया गया हो!

(2) सताव से भाग जाना।

पढ़ें मत्ती 10:11-14,23। मसीही लोगों को परमेश्वर के राज्य के संदेश की पहले नगर में प्रयास और घोषणा करनी चाहिए और उस नगर में भलाई करनी चाहिए। तौभी, यदि नगर उनका विरोध करें, उन्हें उस नगर को छोड़ देना चाहिए और दूसरे नगर में चले जाना चाहिए। और जब नगर उन को सताये तो उन्हें दूसरे नगर में भाग जाना चाहिए।

(3) सताव का विरोधा करना।

पढ़ें रोमियों 12:17-19; 1तीमुथियुस 2:1-6।

बहुत से लोग सताव का विरोधा करते हैं। वे अपील करते हैं, हड़ताल करते है, शान्त रुप से अधिकारियों का विरोध करते हैं या आक्रमक रुप से अधिकारियों का आक्रमकता, झगड़े, रास्ते जाम, पत्थर फेकने, खिड़की तोड़ने, दुकानों को लूटने, कारों को जलाकर, पुलिस पर हमला आदि कर विरोध करते हैं।

जबकि मसीही लोगों को सम्बन्धित अधिकारियों के ध्यान को अन्याय की ओर ले जाने के लिए कभी भी अपशब्दों या आक्रमक विरोध को अधिकारियों के विरुद्ध नहीं करना चाहिए। मसीही लोगों को कभी भी लोगों को धामकी नहीं देनी चाहिए, कभी हिंसा नहीं करनी चाहिए और कभी भी बदला नहीं लेना चाहिए। यदि वे ऐसा करते हैं वे अपने विरोधी के समान दुष्ट बन जाते हैं और परमेश्वर उनका न्याय करेगा। मसीही

लागों को कभी भी अपने विरोधियों के दुष्ट तरीको को अपनाना नहीं चाहिए। एक मसीही कभी भी आतंकवादी नहीं हो सकता और एक आतंकवादी कभी भी मसीही नहीं हो सकता।

तौभी, जब मसीही लोग अन्याय को देखें, तो उसे संबन्धित अधिकारी को बताएं। यदि अधिाकार बहुत दुष्ट हैं, तो यह अकलमंदी होगी कि अधिकारियों से उनकी दुष्टता की बात न करें। इसके बदले मसीही लोगों को अधिकारी लोगों के बदलाव के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (1तीमुथियुस 2:1-16)। और मसीही व्यक्तियों को जो अधिकारियों या समाज के अन्याय से होकर गुजर रहे है उन लोगों को आराम पहुँचाना चाहिए (मत्ती 5:10; 25:37-40; इब्रानियों 10:33-34; नीतिवचन 9:8-9)।

(4) सताव को सहे

पढ़ें 1पतरस 2:21,23। कुछ मसीही लोग इस परीक्षा में पड़ते है कि सताव न सहे। तौभी, सताव के क्षेत्र में मसीही लोगों को यीशु मसीह के नक्शे कदम पर चलने के लिए बुलाया गया है। जब लोग यीशु का अपमान कर रहे थे, उसने उनका विरोध नहीं किया; जब उसे सताया गया उसने कोई धामीकी नहीं दी। इसके बदले उसने स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौप दिया जो न्याय करने में धर्मी है। मसीही लोगों को अपने सताने वालो के प्रति प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए, परन्तु इसके बदले *परमेश्वर की ओर प्रतिक्रिया दें*, सताव को सहने के लिए अनुग्रह की मांग करें और जीवित परमेश्वर के हाथों में अपने जीवन और परिस्थितियों को सौप दें। न्याय के अन्तिम दिन में, परमेश्वर सभी व्यक्तियों का उनके व्यवहार, वचन और बर्ताव के अनुसार न्याय करेंगे।

(5) सताव का प्रयोग इस प्रकार धार्मिकता को फैलाने के लिए करें।

पढ़ें मत्ती 5:6,10,20,38-42; इब्रानियों 10:32-34; 13:3; मत्ती 25:37-40। मसीही व्यक्ति को कभी दुष्ट व्यक्ति का विरोध नहीं करना चाहिए(मत्ती 5:39)। जब दुष्ट व्यक्ति उन्हें मारे, वे उसे दुबारा मारने की अनुमति दें जब तक उसका क्रोध शान्त न हो जाए। जब दुष्ट व्यक्ति उनकी कोई वस्तु को कब्जा ले, तो वे उसे और दे दें। जब दुष्ट व्यक्ति उन से जबरदस्ती एक मील तक वजन उठवाये, वे उसे दो मील के लिए उठा ले (मत्ती 5:39-42)। मसीही व्यक्ति की धार्मिकता उनके शत्रुओं की उमीद से आगे निकल जानी चहिए (मत्ती 5:20)। उन्हें अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहिए, उनके लिए भला करें जो उन से घृणा करते हों, जो शाप दे उन्हें आशीष दें और जो उनके साथ बुरा व्यवहार करें उनके लिए प्रार्थना करें(लूका 6:27-28)। यीशु मसीह उन लोगों को जो सताव सहते हैं आशीष देंगे क्योंकि उन्होंने वह किया जो मसीह की दृष्टि में सही था(मत्ती 5:10)। जो कारागार में हो मसीही लोगों को उस से हमदर्दी होनी चाहिए (इब्रानियों 10:34) और उन्हें याद करना चाहिए जिनके साथ जेल में बुरा व्यवहार हुआ या मार दिये गये (इब्रानियों 13:3)। मसीही लोगों को भूखों को खिलाना चाहिए और प्यासों की प्यास बुझानी चाहिए, अनजानों को अपने घर में बुलाये, जिनको कपड़ों की आवश्यकता हो उन्हें कपड़े दें और बीमार को भेंट करने जाएं (मत्ती 25:37-40)। मसीही लोगों को ऐसे काम करने चाहिए जो एक ओर तो कष्ट में लोगों की पीड़ाओं को कम कर दें और दूसरी ओर समाज में व्याप्त गलत को सही ढांचे में बदल दे।

3. सताव में शामिल अन्य महत्वपूर्ण बातें।

खोजें और चर्चा करें। आप क्या सोचते हैं कि मसीही लोगों को बच्चों को सजा, गर्भपात, इच्छामृत्यु, आजीवन कारावास और मृत्यु की सजा जैसी समस्याओं में शामिल सताव के साथ खड़ा होना चाहिए?

(1) बच्चों की सजा।

पढ़ें नीतिवचन 13:24। बाइबल अभिभावकों को उनके बच्चों को उनकी गलती पर सजा देने के लिए बोलती है। तौभी, अभिभावक और शिक्षक बच्चों को कभी भी बिना सोचे समझे, मुक्का या घाव और नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं मारेंगे। उनहें बच्चों को सही तरीके से सजा देनी चाहिए, उसे कुल्हों पर छड़ी से मार कर क्योंकि छड़ी सजा देने का एक ऐसा यंत्र है जो दर्द तो देता है परन्तु घाव नहीं देता।

(2) गर्भपात।

पढ़ें निर्गमन 20:13; भजनसंहिता 139:13। गर्भपात अजन्में बच्चों को मार देना होता है जिन्हें उनके माता पिता पैदा करना नहीं चाहते। तौभी, यह परमेश्वर होता है जो लोगों को अद्‌भुत तरीके से रचता है। क्योंकि लोग लोगों को नहीं बना सकते इसलिए उन्हें मारने के लिए मना किया गया है।

(3) इच्छा मृत्यु।

पढ़ें मरकुस 10:19. इच्छा मृत्यु को उन व्यक्तियों के लिए जो किसी बीमारी, अवसाद या बुढ़ापे से ग्रसित होते हैं ''दया हत्या'' भी कहते है। जो भी हो, परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से प्रत्येक प्रकार की हत्या के तरीके को मना करते है।

(4) मृत्यु दण्ड।

पढ़ें उत्पत्ति 9:5-6; निर्गमन 21:12-14; व्यवस्थाविवरण 22:25-27; रोमियों 13:4। पुराने नियम की व्यवस्था बलात्कारी को मृत्यु दण्ड की सजा देती है। आप क्या सोचते हैं कि वर्तमान समय में समाज को बलात्कारीयों, अपहारणकर्त्ताओं, हत्यारों आदि के साथ क्या करना चाहिए। आप क्या सोचते है कि वर्तमान समाज को बलात्कारीयों, अपहारणकर्त्ताओं, हत्यारों, नशा पैदा करने वालो, वे लोग जो सम्मान हत्या करते है, आतंकवादियों और मसीही लोगों के साथ पवित्र युद्ध में शामिल लोगों के साथ क्या करना चाहिए? या इन अपराधियों को अजीवन कारावास ही मिलना चाहिए? या उन्हें जल्द छोड़ देना चाहिए जिससे वे और अपराध कर सकें?

च. कष्टों का अभिप्राय या मूल्य

परिचय दें। बाइबल हमें सिखाती हैं कि मसीहियों के कष्टों का बहुत महत्व है। मसीही लोग जानते हैं कि कष्टों के द्वारा परमेश्वर लोगों के चरित्र का निर्माण करते हैं, ताकि वे इस संसार में काम करने योग्य तथा बाद में स्वर्ग में प्रवेश करने योग्य बन जाएं।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित गद्यांशों के हिसाब से कष्ट सहने के क्या लाभ हैं?

1. कष्टों से परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता उत्पन्न होती है।

पढ़ें भजन. 119:67,71।

कष्टों से परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता उत्पन्न होती है। कठिनाईयों, सताव और कष्ट मसीहियों को बाइबल में उत्तर,आराम और सामर्थ्य खोजने के लिए मज़बूर करते हैं।

2. कष्टों से चरित्र का निर्माण होता है।

पढ़ें याकूब 1:2-4; रोमियों 5:3-5।

कष्टों से मसीहियों का चरित्र निर्माण होता है। जब कोई जन यीशु मसीह पर विश्वास करता है तो उसका रिश्ता परमेश्वर के साथ पूरी तरह से बदल जाता है। लेकिन परमेश्वर के साथ उसका रिश्ता बदलने के कारण, उसके जीवन की सारी घटनाएं व गतिविधियां सब बदल जाती है। मसीही बनने से पहले, उसके जीवन में कष्टों या क्लेशों का कोई अर्थ नहीं था। लेकिन मसीही बनने के बाद दु:ख या कष्ट बेकार नहीं है, वरन इसके द्वारा मसीही के जीवन में कई विशेष गुणों को निर्माण होता है। उदाहरण के लिए:

(1) कष्टों से आनन्द उत्पन्न होता है।

एक मसीही दु:खों में भी इसलिए आनन्दित हो सकता हैं, क्योंकि दु:खों का अपना महत्व होता है। वह दु:ख को अपने लिए परमेश्वर के प्रेम का लाभकारी प्रगटीकरण मानते हैं।

दु:ख की घड़ी में लोग परमेश्वर में आनन्दित होते हैं (प्रेरितों 5:41)। वे प्रभु यीशु मसीह के लिए कष्ट सहने को एक आदर की बात मानते हैं, क्योंकि यीशु मसीह, मसीहियों पर हुए अत्याचारों को अपने ऊपर हुए अत्याचारों की तरह से लेते हैं(मत्ती 25: 40,45; गलातियों 6:17; कुलुस्सियों 1:24; 1पतरस 4:13-14)।

एक मसीही कष्टों के बीच में इसलिए भी आनन्दित हो सकता है, क्योंकि वह उस समय में परमेश्वर की वास्तविकता और सामर्थी सहायता का अनुभव करता है।(रोमियों 8:35-39; 1कुरिन्थियों 4:9-13; 2 कुरिन्थियों 1:4-10; 11:23-30; 12:7-10; 2तीमुथियुस 3:11-12)। वह इसलिए भी आनन्दित होता है कि क्लेश ऐसा समय होता है जब परमेश्वर कष्टों और मुसीबतों के बीच में अपनी सामर्थ्य को प्रगट करता और यहां तक कि उसे छुड़ाता है। एक मसीही इसलिए भी कष्टों में आनन्दित होता हैं क्योंकि उसकी समस्या अब परमेश्वर की सम्भवता बन गयी है!

(2) कष्टों से धीरज उत्पन्न होता है।

जब कोई मसीह दु:ख उठाता है, तो उसमें धीरज और दृढ़ता उत्पन्न होती है। एक तरफ तो वह धीरज के साथ दु:ख उठाना सीखता है। और दूसरी ओर, वह दृढ़ता के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाना सीखता है। एक मसीही की कमजोरी में ही प्रमेश्वर की सामर्थ्य प्रगट होती है(2कुरिन्थियों 12:9)! जब तकलीफों से लड़ने वाला मसीही जन इस बात को पहिचान जाता है कि वह तो कमज़ोर है, लेकिन परमेश्वर बलवन्त और उसकी मदद करने के लिए सदैव तत्पर है, तो वह परमेश्वर से सहायता की खोज करता है। क्योंकि परमेश्वर

की सहायता हमेशा काफी होती है इसलिए, मसीहीयों का विश्वास मज़बूत होता और यीशु मसीह तथा उसकी मसीही बुलाहट में बने रहने में सहायता करता है।

(3) धीरज से चरित्र उत्पन्न या ईमानदारी प्राप्त होती है।

ग्रीक भाषा में "डोकिमोस" शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, जिसका अर्थ परखा और सत्यापित किया हुआ होता है। परमेश्वर मसीहियों को कसौटी पर कसने के लिए कठिनाईयों, सताव और तकलीफों का इस्तेमाल करते हैं। जब कोई मसीही तकलीफों में धीरज धरता है, तो वह *साबित* करता है कि परमेश्वर उसके लिए और वह परमेश्वर के लिए विश्वासयोग्य है। जब एक मसीही जन यीशु मसीह और मसीही कामों के कारण कष्टों को सहता है, तब मसीह उस मसीही पर अपनी *ग्रहणयोग्य ठहराने* वाली मुहर लगाता है। यह ऐसा है मानो परमेश्वर कह रहे हों, "मैंने तुझे परखा और तू खरा निकला! मैं तुझे स्वीकृत मसीही के रूप में स्वीकार करता हूं।" इस तरह से, जब कोई मसीही कठिनाईयों, सताव और क्लेशों में से होकर गुजरता है तो परमेश्वर उसकी ईमानदारी की परीक्षा ले रहे होते हैं।

(4) स्वीकृत चरित्र से आशा उत्पन्न होती है।

जब कोई व्यक्ति कष्टों और परीक्षाओं में हार मान जाता है तो, उसकी आशा या अपेक्षा धुमिल हो जाती है। लेकिन जब वह कष्टों को सहता है, और परीक्षाओं में धीरज धरता है, तो उसकी आशा व अपेक्षा कि वह एक दिन जरूर जयवन्त होगा प्रबल होती चली जाती है।

3. कष्टों से परिपक्वता आती हैं।

पढ़ें याकूब 1:2-4; इब्रानियों 12:1-13। कष्टों से मसीही परिपक्वता आती है। याकूब के अनुसार, क्लेशों और परीक्षाओं से मसीहियों में *लगातार* परिपक्वता या बेहतर क्षमता या सिद्धता को निरन्तर उत्पादन होता है। इब्रानियों के अनुसार परमेश्वर द्वारा किये जाने वाले सुधार व प्रशिक्षण से मसीही लोग परमेश्वर की पवित्रता, धार्मिकता और शान्ति में प्रतिभागिता करने योग्य बन जाते हैं।

4. कष्टों से साहस, हियाव और निडर प्रतिक्रियाएं पैदा होती हैं।

पढ़ें फिलिप्पियों 1:12-14। सताव से साहत उत्पन्न होता हैं। फिलिप्पियों 1:12-14 में लिखा है कि, "मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़त हुई है..... क्योंकि उन में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं।" पौलुस रोम के फिलिप्पी में कैद था। उसके क्लेश व दु:खों के उदाहरण ने दूसरे मसीहियों को यीशु मसीह की गवाही प्रदान करने की हिम्मत प्रदान की। फिलिप्पी में बहुत से राजमहल के सैनिक और राजघराने के परिवार के सदस्य भी(फिलिप्पियों 4:22) मसीह में विश्वासी हो गये।

5. कष्टों से सुसमाचार का प्रसार होता है।

पढ़ें 1 थिस्लुनिकियों 1:6-8। सताव से सुसमाचार का प्रसार बढ़ता है। 1थिस्लुनिकियों 1:6-8 में, पौलुस कहता है कि थिस्लुनिकियों में लोगों पर हुए सताव की वजह से परमेश्वर पर उनके विश्वास की कीर्ति चारों

तरफ फैल गयी। जब कोई मसीही विश्वास मसीह के कारण इस तरीके से दु:ख उठाता है जिससे यीशु मसीह की महिमा होती है, तो उसके दु:ख बहुत से लोगों पर प्रगट हो जाते हैं। जिसे देखकर दूसरे मसीही भी कष्ट सहने के लिए साहसी हो जाते हैं। मसीही शहीदों की मृत्यु सुसमाचार का बीज बन जाती हैं। सी. एस.लूइस ने कहा, "परमेश्वर हमारी खुशी में हमसे फुसफुसाते हैं, लेकिन हमारे कष्टों के समय में वह हमारे विवेक में बोलते हैं। मसीही दु:ख बहरे संसार को जगाने के लिए एक तुरही या मेगाफोन के जैसे काम करता है।

6. कष्ट यीशु मसीह की महिमा को प्रगट करते हैं।

पढ़ें 1पतरस 4:14। सताव मसीहियों में यीशु मसीह की महिमा को प्रगट करते हैं। जब कोई मसीही यीशु मसीह के नाम के कारण दु:ख उठाता है, तो वह धन्य है,क्योंकि महिमा और विश्राम का आत्मा उस पर छाया करता है। जब वह यीशु मसीह के कारण दु:ख उठाता है, तब परमेश्वर का तेज उसके द्वारा प्रगट होगा। तो उसे वह आनन्द, शान्ति और परमेश्वर पर भरोसा प्राप्त होगा जो मनुष्य की समझ से परे है। दु:ख सहने वाला मसीही जन अपने दुश्मने को भी क्षमा करने में सक्षम होगा, जैसा कि मसीह ने दूसरों को क्षमा किया था। वह ठीक उसी तरह मृत्यु तक धीरज धरेगा, जैसे कि मसीह ने भी मृत्यु तक धीरज धरा था। हालांकि, विश्वासी के धीरज को मसीह की तरफ से मसीहियों के लिए महान प्रेम माना जाना चाहिए, परमेश्वर के प्रति मसीही के प्रेम की शक्ति या कुछ और नहीं समझा जाना चाहिए(रोमियों 8:28-39)।

7. कष्ट मसीही जन को स्वर्ग के लिए तैयार करते हैं।

पढ़ें मत्ती 5:11-12; 2थिस्लुनिकियों 1:4-5।
सताव मसीही जन को स्वर्ग के लिए तैयार करते हैं।

सारे सताव और परीक्षाएं, जिनका सामना थिस्लुनिकियों के लोग कर रहे थे, इस बात का प्रमाण थे कि परमेश्वर का न्याय सही था। और उसके परिणाम स्वरूप मसीही लोग परमेश्वर के राज्य के योग्य समझे जाएगें, जिसके लिए उन्होंने इतने कष्ठ उठाये थे। मत्ती 5:11-12, यीशु ने कहा,"धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बढ़ा फल है"।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "परमेश्वर के कष्ट और श्रेष्ठता" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **प्रकाशितवाक्य 19-22** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। यूहन्ना की पुस्तक से कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था। (16)यूहन्ना 16:8, (17) यूहन्ना 16:13,(18) यूहन्ना 16:14,(19)यूहन्ना 17:15, (20)यूहन्ना 18:36।
5. **बाइबल अध्ययन।** अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें। यूहन्ना रचित सुसमाचार का सारांश तैयार करें।

एक बार फिर से यूहन्ना रचित सुसमाचार को पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों की सहायता से स्वयं अपना सारांश लिखें:

- यूहन्ना रचित सुसमाचार को एक शीर्षक प्रदान करें।
- यूहन्ना रचित सुसमाचार को शीर्षक व उपशीर्षक प्रदान करें।
- यूहन्ना रचित सुसमाचार में कौन सी मुख्य शिक्षाओं को प्रदान किया गया है?
- यूहन्ना रचित सुसमाचार में कौन से महत्वपूर्ण व्यवहारिक सबक पाये जाते हैं?
- यूहन्ना रचित सुसमाचार आपके हिसाब से आज के समय और समाज के साथ किस प्रकार न्यायोचित्त ठहरता है?
- समूह में यूहन्ना रचित सुसमाचार के एक पहलू पर एक प्रस्तुति करें। आप इस सच्चाई को दूसरों को किस प्रकार बताएंगें?

सम्भव प्रस्तुतियां निम्नलिखित हैं:

- सत्य की व्याख्या चित्र और दृष्टान्तों के द्वारा करें।
- समूह को किसी सच्चाई के बारे में एक छोटा सा संदेश दें।
- एक कविता लिखें या एक गीत रच कर समूह के सामने प्रस्तुत करें।
- कोई लघु नाटक लिखकर उसे समूह के सामने प्रस्तुत करें।
- एक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता को समूह में आयोजित करें।
- एक कहानी या गवाही को बताएं जिससे यूहन्ना रचित सुसमाचार की कोई सच्चाई प्रगट होती हो।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।